BEGINNING OF CIVILIZATION IN INDIA (PART-2)

PALAEOLITHIC AGE (पुरापाषाण युग)

भारतीय पाषाण काल को भूवैज्ञानिक युग, औजार के प्रकार तथा तकनीक और जीवन निर्वाह की पद्धति में परिवर्तन के आधार पर पुरा पाषाण युग, मध्य पाषाण युग तथा नवपाषाण युग में बांटा गया है।

Palaeolithic शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा से हुई है जो दो शब्दों का योग है- **Palaeo** (Old) +**Lithois**(Stone)=**Old Stone** Age.

सामान्यतः 200,000 वर्ष पूर्व से 100,000 वर्ष के बीच ***निम्न पुरापाषाण युग***, 100,000 वर्ष से 40,000 वर्ष के बीच ***मध्य पूरा पाषाण युग***, 40,000 से 10,000 के बीच ***ऊपरी पुरापाषाण युग*** माना गया है किंतु विभिन्न पुरातात्विक स्थलों के लिए पृथक पृथक तिथियां प्रस्तावित है।

Scanned with CamScanner

सामान्य तौर पर पुरा पाषाण संस्कृति प्लीस्टोसीन युग तथा मध्य पाषाण और नव पाषाण संस्कृतियॉ होलीसीन युग में रखी गई है।

भारतीय उपमहाद्वीप के सभी भागों से पुरापाषाण कालीन औजार प्राप्त होते हैं किंतु गंगा और सिंधू के

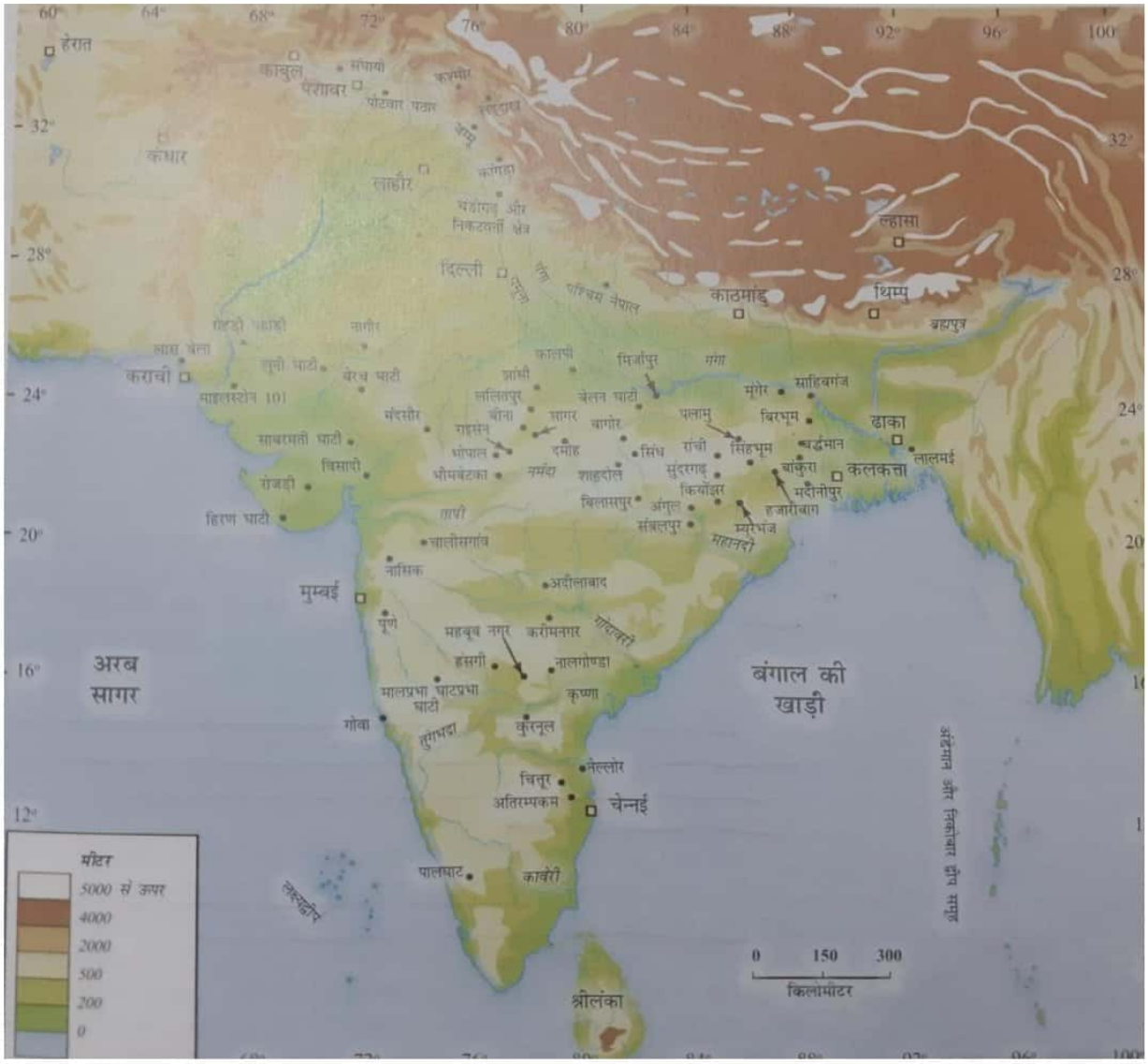

Scanned with CamScanner

मैदानी क्षेत्र से इनकी प्राप्ति प्रायः नगण्य है। पंजाब में झेलम, सोहन तथा चिनाब नदी घाटियां, उत्तर प्रदेश के बांदा, मध्य भारत में नर्मदा और साबरमती नदी घाटियों में, दक्षिण भारत के कुरनूल और कडप्पा जिलों में इसकी प्राप्ति हुई है।

निम्न पुरा पाषाण कालीन औजार

अधिकांशतः प्रारंभिक पुरापाषाण कालीन औजार ***कोर*** (***Core***)औजार है जो ***क्वार्टजाइट*** जैसे कठोर पत्थर के बनाए गए हैं । इनमें चॉपिंग (चीरने /काटने वाले) औजार, हस्त कुठार और क्लीवर प्रमुख है। ऐसा संभव है कि औजारों के निर्माण के लिए चट्टानों में आग लगाकर गर्म किया जाता हो फिर उन पर पानी डालकर ठंडा करने से वे टूट जाते थे। पुरापाषाण औजारों में धीरे-धीरे विकास दिखलाई

Scanned with CamScanner

पड़ता है। पहले खुरदरे औजार बनते थे लेकिन बाद में चिकने औजार बनाए जाने लगे।

यदि एक पत्थर के टुकड़े को तोड़ा जाए(आघात तकनीक) तब उससे प्राप्त सबसे बड़ा टुकड़ा ***कोर*** कहलाता है तथा प्राप्त किए गए अन्य छोटे टुकड़े '***फ्लेक***' कहलाते हैं। सबसे बड़े टुकड़े से बने औजार

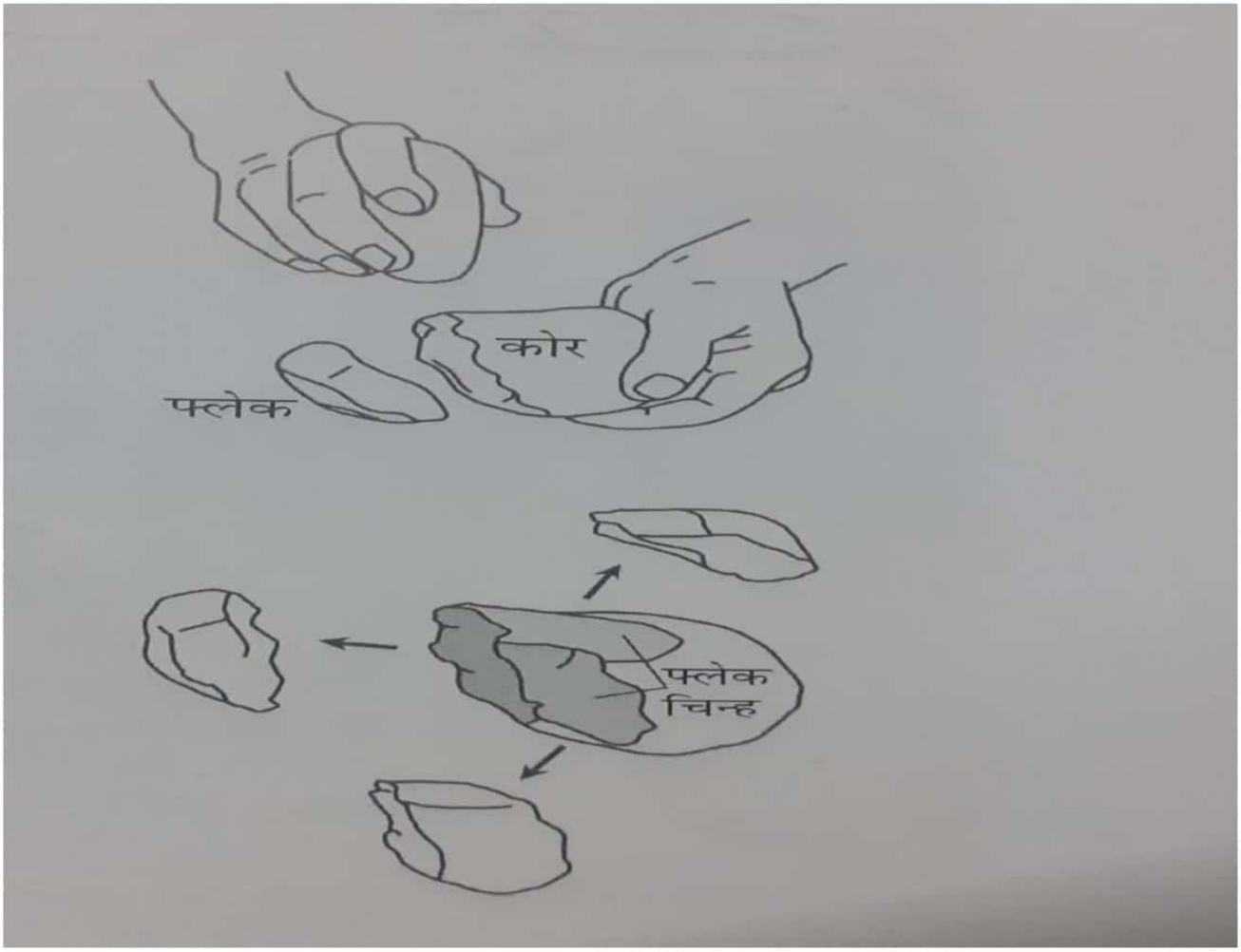

Scanned with CamScanner

'***कोर***' कहे जाते हैं तथा छोटे टुकड़े से बने औजार '***फ्लेक औजार***' कहे जाते हैं। किसी चट्टान से टुकड़ों को काटना ***फ्लेकिंग*** या ***फलकीकरण*** कहा जाता है। इस प्रक्रिया में चट्टान पर बने चिन्ह ***फ्लेक चिन्ह*** कहे जाते हैं।

हस्त कुठार (Hand axe) सामान्यतः कोर औजार होता है। इसे द्विफलक औजार भी कहते हैं, क्योंकि इनके दोनों फलकों पर काम किया होता है ।मोटे तौर पर यह त्रिकोणीय होता है। इसका मूठ चौड़ा और आगे का हिस्सा पतला होता था। इसका उपयोग काटने या खोदने में होता था।

Scanned with CamScanner

चॉपिंग औजार कोर पत्थर तथा छोटे पत्थर दोनों से बनाए गए थे। इसमें पत्थर से टुकड़ों को इस प्रकार निकाल दिया जाता था कि बहुत सारे उभार बन जाते थे। ***चौपर (Chopper)*** एक फलक वाला औजार था अर्थात इसके एक हिस्से पर ही काम किया हुआ होता था। यह एक स्थूल औजार था जिसका उपयोग काटने में होता था।

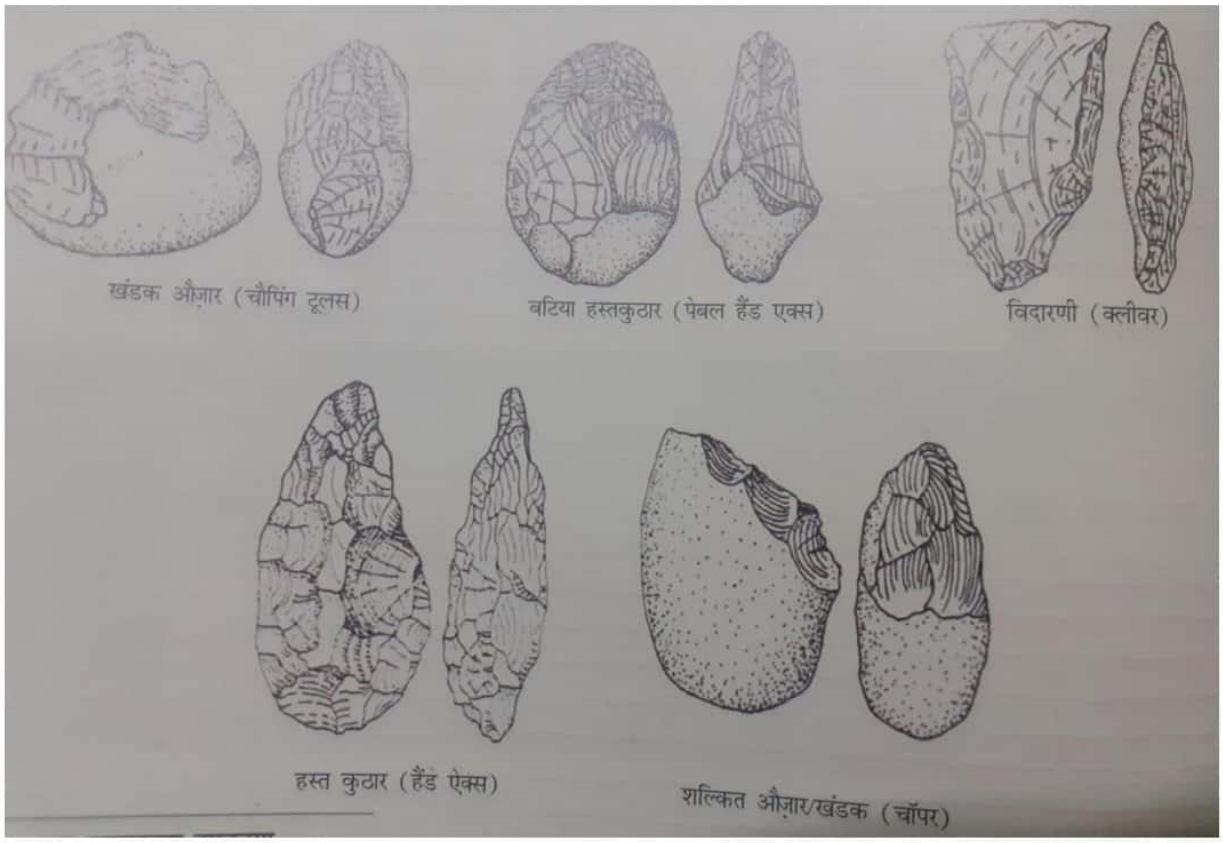

Scanned with CamScanner

क्लीवर (***Cleaver***)अपेक्षाकृत समतल औजार होते थे जिन्हें चौड़े आयताकार या त्रिकोणीय फ्लेकों से बनाया जाता था। इसका एक हिस्सा चौड़ा तथा तीक्षण फलक वाला होता था। यह दूहरी धार वाला औजार था जिसका उपयोग पेड़ों को काटने तथा चिरने के लिए किया जाता था।

अशुलियन (Acheulian) शब्द का प्रयोग औजारों के वैसे ढेर के संदर्भ में किया जाता है जिसमें हस्तकुठारों और क्लीवर औजारों की अपेक्षाकृत विकसित नमूने मौजूद होते हैं ।यह निम्न पुरापाषाण युग के लिए प्रयुक्त होता है किंतु बाद के काल से भी यह प्राप्त होते रहे हैं।

कर्नाटक के गुलबर्गा जिले का एक गांव ***इसामपुर*** में पत्थर के औजार बनाने का बड़ा केंद्र मिला है। यह 7,200 वर्ग मीटर में फैला पुरापाषाण युगीन स्थल है

Scanned with CamScanner

इस स्थल से अशुलियन औजारों के प्रमाण मिलते हैं। अशुलियन श्रेणी की सामग्रियों में ज्यादातर कोर औजार अथवा बड़े आकार वाले फ्लैक औजार तथा मलवा मिला है। औजारों में छुरी, हस्त कुठार, क्लीवर तथा स्क्रैपर प्रमुख है किंतु अधिकतर औजार अर्ध निर्मित अवस्था में है, तैयार औजार कम ही है।

To be continued...

BY : ARUN KUMAR RAI

Asst.Professor

P.G.Dept.of History

Maharaja College,Ara.

Scanned with CamScanner